St. Lawrence High School

A JESUIT CHRISTIAN MINORITY INSTITUTION

Hindi Study Material (02)

Class- 10 पाठ - आत्मत्राण

Date: 04/05/2020

कवि परिचय

रविंद्रनाथ ठाकुर का जन्म 7 मई 1861 ब्रिटिश भारत के कलकत्ता शहर में हुआ था। एक प्रख्यात लेखक कवि नाटककार संगीतकार चित्रकार होने के नाते उन्होंने करोड़ों लोगों हिंदुस्तानियों के हृदयों को स्पंदित किया।
उन्होंने पहली कविता 8 साल की उम्र में दिखी थी और 1977 में केवल 16 साल की उम्र में ही उनकी पहली लघु कविता प्रकाशित हुई। देश और विदेश की सारे साहित्य, दर्शन और संस्कृति आदि में उन्हें अत्यंत विराट ज्ञान था। कविता, गान, कथा, उपन्यास, नाटक, प्रबंध शिल्पकला सभी विधाओं में उनकी रचनाएँ प्रसिद्ध थी। उन्होंने कुछ पुस्तकों का अंग्रेजी में अनुवाद भी किया जिससे उनकी प्रतिभा पूरे विश्व में फैली।
रवींद्रनाथ ठाकुर ज्यादातर अपनी पद्य कविताओं के लिए प्रसिद्ध है।वे उनकी छोटी कहानियों के लिए शायद सबसे अधिक लोकप्रिय माने जाते है। इतिहास, भाषा विज्ञान और अध्यात्म से जुड़ी कविताएं भी उन्होंने लिखा है। गुरुदेव के नाम से रवींद्रनाथ टैगोर ने बांग्ला साहित्य को एक नई दिशा प्रदान की। उन्होंने बंगाली साहित्य में नए तरह के पद्य और गद्य के साथ बोलचाल की भाषा का भी प्रयोग किया। उन्होंने एक दर्जन से अधिक उपन्यास लिखे। इनमें चोखेर बाली, घरे बाहिरे, गोरा आदि शामिल थे। उनके उपन्यासों में मध्यम वर्गीय समाज का विशेष रूप उद्धृत हुआ है। 1913 ईस्वी में गीतांजलि के लिए उन्हें साहित्य का नोबेल पुरस्कार मिला जो कि एशिया में प्रथम विजेता साहित्य माना जाता है। उनके कुछ उल्लेखनीय कार्य है- गीतांजलि, गोरा, घरे बाहिरे, जन गण मन, रवींद्र संगीत, आमार सोनार बांग्ला, नौका डूबी आदि।
टैगोर ने करीब 2,230 गीतों की रचना की। रवींद्र संगीत बांग्ला संस्कृति के अभिन्न अंग माने जाते है। प्रकृति के प्रति गहरा लगाव रखने वाला यह प्रकृति प्रेमी ऐसा एकमात्र व्यक्ति है जिसने दो देशों के लिए राष्ट्रगान लिखा है।

शब्दार्थ

व्यथित- वेदनाग्रस्त, करुणाम- दयावान, सांत्वना- दिलासा, पौरुष- साहस और शौर्य, क्षय- नाश, त्राण- रक्षा, भार- जिम्मेदारी।

सारांश

१) विपदाओं से मुझे बचाओ, यह मेरी प्रार्थना नहीं
केवल इतना हो करुणामय
कभी न विपदा में पाऊं भय।

उ: प्रस्तुत पंक्तियों में कविवर रवींद्रनाथ ठाकुर ने अपनी स्वालंबिता का परिचय देते हुए ईश्वर से अनुग्रहित करते हैं कि ईश्वर जीवन में कितनी आपदाएं क्यों ना आ जाए परंतु आप मुझे उन विपत्तियों से बचाए यह मेरी अभ्यर्थना नहीं है किंतु केवल आपकी इतनी कृपा हो कि मैं उस प्रतिकूल परिस्थितियों में अपनी हिम्मत को बरकरार रखते हुए उसका डटकर सामना कर पाऊँ।
आशय यह है कि कविवर हम मनुष्य को अपनी स्वावलंबन रूपी शक्ति एवं आत्मविश्वास को कायम रखकर प्रतिकूल परिस्थितियों में हिम्मत रखने की सीख देते है।

२) दुख ताप से व्यथित चित्त को न दो सांत्वना नहीं सही
पर इतना होवे करुणामय
दुख को मैं कर सकूं सदा जय।

कवि रवींद्रनाथ ठाकुर ईश्वर से प्रार्थना करते हुए प्रार्थना गीत रचते है। प्रार्थना करते हुए वह ईश्वर को अपने को निर्भर बनाने की गुजारिश करते है कि जब कभी उनके जीवन में दुख की काली छाया प्रस्फुटित हो जाए तब उस घोर निराशा के समय प्रभु चाहे उनके हृदय को शांत एवं सांत्वना न दे न सही, परंतु प्रभु की कृपा इतनी होनी चाहिए कि विप्पति के काल में भी वह अपने दुखों पर विजय प्राप्त कर सके। उनकी आत्मा निरसता के घेरे में ग्रसित न हो, वह अपनी हिम्मत के साथ दुख की घड़ी को परास्त कर सके।
आशय यह है कि मनुष्य के जीवन में सुख और दुख दोनों ही एक ही सिक्के के दो पहलू है। अंधेरे के बाद सूरज अर्थात प्रकाश जीवन को निश्चय ही प्रकाशित करेगा। इसी कारण मनुष्य सिर्फ दुख के पल को भगवान की आशा पर छोड़ना कदापि उचित नहीं है, बल्कि हम मनुष्य को त्रासदी के समय में हिम्मत से कर्मशील रहना चाहिए।

३) कोई कहीं सहायक न मिले
तो अपना बल पौरुष हिले

हानि उठानी पड़े जगत में लाभ अगर वंचना रही
तो भी मन में ना मानू क्षय।

कविगुरु रवींद्रनाथ ठाकुर प्रस्तुत पंक्तियों में ईश्वर से विनती करते हुए कहते हैं कि यदि कभी ऐसा क्षण आए कि उन्हें पूर्ण रूप से इस संसार में एकांत रहना पड़े, कोई उनका सहायक या मददगार न बने तब उनका पुरुषार्थ उनका साहस कदापि न हिले। अगर इस संसार में कभी उन्हें सिर्फ नुकसान ही उठाना पड़े या इस संसार से वंचना अर्थात धोखा ही प्राप्त हो तब भी वे इसे किसी प्रकार की सर्वनाश न समझे।
आशय यह है कि चाहे मनुष्य सामाजिक प्राणी हो परंतु अगर कभी इस दुनिया में वह अकेला हो जाए, चारों तरफ नकारात्मकता की परिस्थितियों का घेरा क्यों ना हो जाए तब भी उसे अपनी हिम्मत निर्भयता या आत्मविश्वास को कायम रखते हुए इस संसार में सकारात्मकता की खोज में अपने को व्यस्त रखना होगा।

४) मेरा त्राण करो अनुदित तुम यह मेरी प्रार्थना नहीं
बस इतना होवे करुणामय
तरने की हो शक्ति अनामय।

कविगुरु कहते हैं हे ईश्वर! आपने जो मुझे इतनी खास जीवन प्रदान किया है, उसकी रक्षा भी आप करो यह मेरी आपसे अनुग्रह नहीं है, बस विनती यह है कि आप इतनी कृपा अवश्य करें कि इतनी शक्ति मुझे प्रदान हो कि मैं अपनी जीवन रूपी नैया को स्वयं ही पार लगा सकूँ अर्थात मुझे इतनी शक्ति देना कि मैं इस विपदा के बवंडर में फंसकर भी उसमें तैरकर अपना किनारा ढूंढ लू।
आशय यह है कि मनुष्य को अपनी आपदाओं का आभास कर उसे स्वयं ही मुकाबला करना चाहिए।

५) मेरा भार अगर लघु करके न दो सांत्वना नहीं सही।
केवल इतना रखना अनुनय-
वहन कर सकूँ इसको निर्भय।
कविगुरु प्रभु से विनती करते हैं कि उनकी जिम्मेदारियां, कर्तव्यों को अगर कम करके प्रभु उन्हें दिलासा भी न दें परंतु इतना अनुनय अवश्य करें कि उस कर्तव्य को पूर्ण करने हेतु निर्भयता या निडरता प्रदान करे।
आशय यह है कि मनुष्य जीवन में अनेक जिम्मेदारियों से लिप्त रहते हैं परंतु इस कर्तव्य की भार तले मनुष्य की कब्र पाई जाती है, जिस कारणवश कुछ लोग उनसे दूर भागते है। प्रस्तुत पंक्ति हमें यही सीख देती है कि जिम्मेदारियों से हमें डर कर विलुप्त नहीं होना चाहिए बल्कि उसका डटकर सामना करना चाहिए।

६) नत शिर होकर सुख के दिन में
तब मुख पहचानूँ छिन छिन में
दु:ख रात्रि में करे वंचना मेरी जिस दिन निखिल मही
उस दिन ऐसा हो करुणामय,
तुम पर करूं नहीं कुछ संशय।

उ: कविगुरु कहते है कि सुख के दिन में मैं नत- शिर अर्थात नतमस्तक होकर सिर झुकाए अभिमान न करते हुए ईश्वर सहित प्रत्येक प्राणी को भलीभांति हर क्षण पहचानता रहूँ। अर्थात उनकी व्यवहार में कोई अहंकार न आये। परंतु जिस दिन जीवन में दुख की काली रात्रि छा जाए, वंचना अर्थात सारी दुनिया धोखेधारी एवं छल- कपट द्वारा जीवन को दूषित कर दे, उस दिन आपकी बस इतनी कृपा हो कि मैं आप पर संदेह ना करू।
आशय यह है कि हमारे जीवन को सुख और दुख दोनों संपूर्णता प्रदान करते हैं। यह दोनों पहलू हमारे जीवन को आकर्षक बनाता है। परंतु मनुष्य का यह व्यवहार कि सुख के दिन वह अभिमान से परिपूर्ण होकर ईश्वर की कृपा को भूल जाते हैं और दुख के दिनों में ईश्वर को अपने स्वार्थ हेतु पुकारते हैं। हमारा जीवन ईश्वर की कृपा से हमें प्राप्त है, हमें उनके कृपा पर कभी संदेह नहीं करना चाहिए। लोगों को यह आशा रहती है कि जीवन में उत्पन्न प्रत्येक दुखद परिस्थिति का भार ईश्वर ने उठाकर उनके जीवन को मुलायम बना देंगे परंतु जब उनकी आशाओं की तिलांजलि हो जाती है तब वह ईश्वर पर आरोप एवं उनके अस्तित्व पर संदेह कर बैठते है। उसी परिस्थिति का अहसास न करने के कारण कविगुरु इस पंक्ति में उनसे अपने ऊपर कृपा प्रदान करने हेतु प्रार्थना करते हैं।

<u>लघु प्रश्न</u>

१) "मेरा त्राण करो अनूदित तुम यह मेरी प्रार्थना नहीं। "
क) प्रस्तुत पंक्ति किसके द्वारा रचित है?
ख) इसमें पंक्ति के द्वारा कवि क्या संदेश देना चाहते हैं?
उ: क) रविंद्र नाथ ठाकुर
ख) प्रस्तुत पंक्ति के माध्यम से कवि हम मनुष्य को यही संदेश देना चाहते हैं कि मनुष्य के जीवन में अनेकों जिम्मेदारियां रहती है, उन जिम्मेदारियों को उन्हें स्वयं वहन करना चाहिए उनके लिए ईश्वर से सहायता का अनुग्रह करना उचित नहीं है। मनुष्य का कर्म ही है उनकी जिम्मेदारी और कर्तव्य को समझते हुए अपने जीवन में अपनी सूझ बुझ के साथ उस कर्तव्य को उन्हें स्वयं पूर्ण करना चाहिए।

२) कवि के अनुसार हमें संकटों का सामना किस प्रकार करनी चाहिए?

उ: कवि के अनुसार हमें संकटों का सामना डटकर निर्भरता के साथ अपनी पौरूष को बरकरार रखते हुए हिम्मत के साथ करना चाहिए।

३) हानि उठानी पडे जगत में लाभ अगर वंचना रही
तो भी मन में न मानूँ क्षय-
क) प्रस्तुत पंक्ति किस पाठ से उद्धृत है?
ख) इन पंक्तियों में कवि क्या कहना चाहते हैं?
उ: क) आत्मत्राण।
ख) प्रस्तुत पंक्तियों के माध्यम से कवि ईश्वर से विनती करते हैं कि अगर ऐसा कभी समय या काल आए जहां पर उन्हें सिर्फ और सिर्फ धोखेधारी और छल कपट का ही सामना करना पड़े, तब भी उनके मन में किसी भी प्रकार का क्षय अर्थात विनाश की मानसिकता पैदा ना हो।

४) रवींद्रनाथ ठाकुर प्रस्तुत पद्य में किससे और क्या विनती करते है?
उ:रविंद्रनाथ ठाकुर प्रस्तुत पद में ईश्वर से विनती करते हुए अनुग्रहित करते हैं कि ईश्वर उन्हें जीवन की मुश्किलों से न बचाए, उनकी जिम्मेदारियों का भार कम न करे, उनके दुख कष्ट को न कम करे, उनकी जिंदगी को बेहतर न बनाए बल्कि उन्हें इतनी शक्ति प्रदान करे कि जिससे वह अपने वपदाओं के समय में अपने साहस अपना और पौरुष को बनाए रखते हुए उसका डटकर सामना कर सकें।

५) कविवर रवींद्रनाथ ठाकुर कब नत मस्तक होना चाहते है?
उ: कविवर रवींद्रनाथ ठाकुर सुख के दिनों में नत मस्तक होना चाहते है। जिस समय मनुष्य अपने अभिमान से परिपूर्ण होता है उस समय कवि अपनी मसुमियात् को कायम रखने हेतु ने शिर होना चाहते है।

Teacher's Name - Riya Saha